जन वाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

“ किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं ”

–सफ़दर हाश्मी

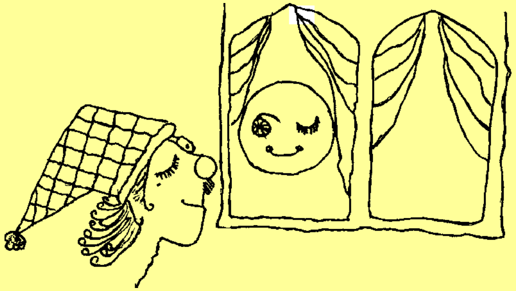

प्रसिद्ध व्यंगकार जेम्स थर्बर की सुंदर कहानी जो बच्चों को ही नहीं बड़ों को भी रास आएगी। नन्हीं राजकुमारी चंद्रमा मांगती है और उसकी जुगाड़ करने में पूरा राज्य भिड़ जाता है। जहां बड़े-बड़े विद्वान हार जाते हैं वहां दरबार का विदूषक सफल होता है। वो सफल इसलिए होता है क्योंकि समस्या का हल नन्ही राजकुमारी खुद ही सुझाती है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य : 10 रुपये B - 34 Price : 10 Rupees

नन्ही राजकुमारी और चंद्रमा

जेम्स थर्बर

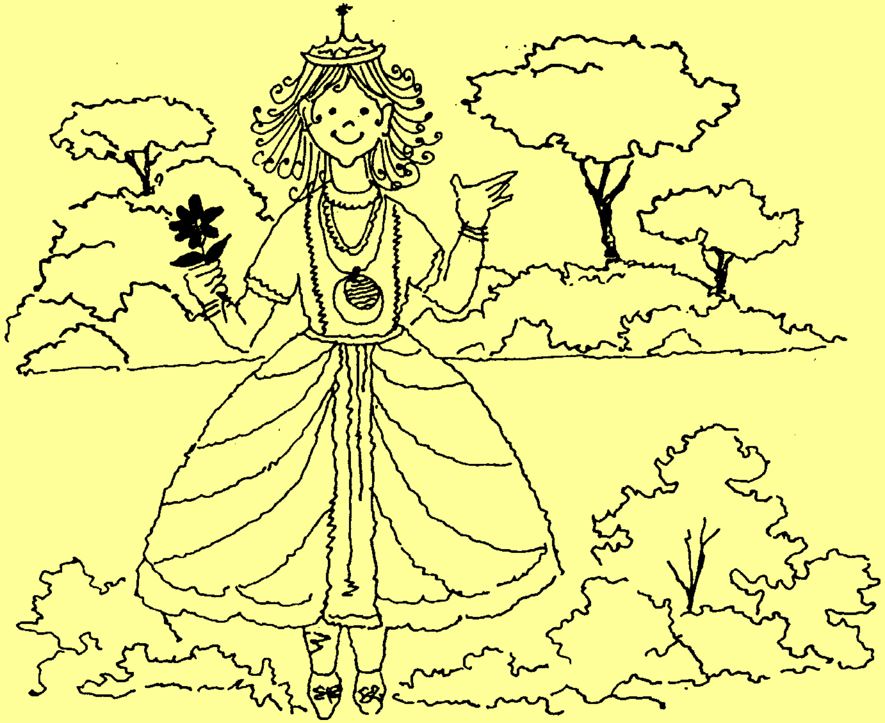

इस किताब का
प्रकाशन भारत ज्ञान
विज्ञान समिति ने
देश भर में चल रहे
साक्षरता अभियानों
में उपयोग के लिए
किया गया है।
जनवाचन आंदोलन
के तहत प्रकाशित
इन किताबों का
उद्देश्य गाँव के
लोगों और बच्चों में
पढ़ने-लिखने
की रुचि पैदा
करना है।

नन्हीं राजकुमारी और चंद्रमा : जेम्स थर्बर

Little Princess & the Moon : James Thurber

प्रस्तुति : तेजी ग्रोवर

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

साभार : चकमक

लेजर ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

पांचवां संस्करण : वर्ष 2007

मूल्य : 10 रुपये

Published by Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block Saket ,
New Delhi - 110017
Phone : 26569943, Fax : 26569773,
Email: bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
Printed at Sun Shine Offset , New Delhi - 110018

नन्हीं राजकुमारी और चंद्रमा

जेम्स थर्बर

नन्हीं राजकुमारी और चंद्रमा

एक बार की बात है समुद्र किनारे के एक राज्य में लैनोर नाम की एक नन्हीं राजकुमारी रहती थी। एक दिन लैनोर ने रसभरी की इतनी चटनी खा ली कि वह बीमार हो गई।

शाही डाक्टर उसे देखने आया। उसने राजकुमारी लैनोर की नब्ज़ देखी, बुखार देखा और उससे कहा कि अपनी जीभ बाहर निकालकर दिखाए। शाही डाक्टर चिंता में पड़ गया। उसने लैनोर के पिता को बुलाया। राजा अपनी बेटी को देखने के लिए आया।

‘‘तुम्हें जो चाहिए बोलो,’’ राजा ने अपनी बेटी से कहा, ‘‘बताओ किस चीज़ के लिए तुम्हारा मन हो रहा है?’’

‘‘हां,’’ राजकुमारी बोली, ‘‘अगर मुझे चंद्रमा मिल जाए तो मैं अच्छी हो जाऊंगी।’’

राजा के पास बहुत विद्वान थे। वह उनसे जो कुछ मांगता, वे हाज़िर कर देते थे। इसलिए राजा ने अपनी बेटी से कहा कि उसे चांद मिल जाएगा।

वह अपने सिंहासन वाले कमरे में गया उसने तीन लंबे और एक छोटा झटका देकर घंटी वाली रस्सी को खींचा। मुख्य वज़ीर फौरन हाज़िर हो गया।

मुख्य वज़ीर बहुत भारी भरकम आदमी था। उसने इतना मोटा चश्मा पहन रखा था कि उसकी आंखें दुगनी बड़ी लग रही थीं। इस वज़ह से जितना बुद्धिमान वह था, उससे दुगना दिखाई दे रहा था।

‘‘मैं चाहता हूं कि तुम चंद्रमा लेकर आओ,’’ राजा बोला, ‘‘राजकुमारी लैनोर को चंद्रमा चाहिए, तभी वह अच्छी हो पाएगी।’’

‘‘चंद्रमा?’’ मुख्य वज़ीर चौंका उसकी आंखें और बड़ी हो गईं। अब वह जितना बुद्धिमान था उससे चौगुना लगने लगा।

‘‘हां, हां चंद्रमा,’’ राजा ने कहा, ‘‘च- न् - द्र - मा, चंद्रमा। आज रात या ज़्यादा से ज़्यादा कल सुबह तक चाहिए।’’

मुख्य वज़ीर ने रुमाल से माथे का पसीना पोंछा और इसके बाद ज़ोर से नाक सिनकी। ''मैंने आज तक आपके लिए बहुत चीज़ें जुटाई हैं महाराज, ''वज़ीर बोला। ''इत्तफाक से मेरे पास उन सभी चीज़ों की सूची मौज़ूद है जो मैंने आपके लिए जमा की हैं।'' उसने अपनी जेब से लंबा चर्मपत्र निकाला। ''ज़रा देखूं।'' उसने माथा सिकोड़ कर पढ़ना शुरु किया, ''मैं अब तक ला चुका हूं - हाथी दांत, लंगूर, मोर, मानिक, दूधिया, पन्ना, गुलाबी हाथी, नीले कुत्ते, सुनहरे कीड़े, तुणमणि की बनी मक्खियां, गाने वाली चिड़ियों की जीभें, फरिश्तों के पंख, यूनिकार्न के सींग, बौने राक्षस, मतस्य कन्याएं, लोबान, अम्बर, गन्धरस, चारण, नर्तकियां, एक पाव मक्खन, दो दर्ज़न अण्डे और एक बोरा शक्कर - मुआफ कीजिए यह तो मेरी पत्नी ने यहां लिख दिया है।''

''मुझे नीले कुत्ते तो याद नहीं हैं,'' राजा ने कहा।

''नहीं सूची में तो हैं नीले कुत्ते और उनके ऊपर यह निशान भी लगा है कि वे आए हैं,'' मुख्य वज़ीर बोला।

''छोड़ो नीले कुत्तों की बात,'' राजा ने कहा, ''इस समय तो मुझे चंद्रमा की ज़रूरत है।''

''मैंने समरकन्द, अरब के ज़न्ज़ीबार से आपके लिए चीज़ें मंगाई हैं महाराज,'' मुख्य वज़ीर बोला, ''लेकिन चंद्रमा ला सकने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। चंद्रमा 35,000 मील दूर है और राजकुमारी के कमरे से बड़ा है। अलावा इसके वह पिघले तांबे का बना हुआ है। नहीं महाराज, मैं आपके लिए चंद्रमा नहीं ला सकता। नीले कुत्ते बेशक, लेकिन चांद तो बिल्कुल नहीं।''

राजा को मुख्य वज़ीर की बात सुनकर बहुत गुस्सा आया। उसने वज़ीर को कमरे से निकाल दिया और उससे कहा कि वह शाही जादूगर को भेज दे।

शाही जादूगर बहुत छोटा दुबला-सा, लंबे चेहरे वाला आदमी था। उसने एक कलगीदार लाल टोप लगा रखा था जिस पर चांदी के सितारे थे। उसने लंबा नीला लबादा भी पहना हुआ था जिस पर सोने के उल्लू बने हुए थे। लेकिन जब राजा ने उससे चंद्रमा की फ़रमाइश की तो उसका चेहरा पीला पड़ गया।

''महाराज आज तक मैंने बेशुमार कमाल आपको दिखाए हैं,'' शाही जादूगर बोला। ''इत्तफ़ाक से मेरी जेब में उन जादुओं की सूची है जो मैंने अब तक पेश किए हैं।'' उसने अपने लबादे की गहरी जेब से एक कागज़ निकाला, ''यह यूं शुरु होता है। प्रिय जादूगर मैं तुम्हें यह दार्शनिक, पत्थर लौटा रहा हूं जिसके बारे में तुम्हारा दावा था .... नहीं यह नहीं है।'' शाही जादूगर ने अपनी जेब से लिपटा हुआ चर्मपत्र निकाला और पढ़ना शुरु किया। ''यह रहा – देखें, इसमें क्या-क्या है। आपके लिए शलज़मों में से खून और खून में से शलज़म निकाले हैं, मैंने रेशम के टोपों में से खरगोश से फूल, डफलियां और फाख्ताएं पैदा की है और फूलों, डफलियों और फाख्ताओं से 'कहीं नहीं' और खरगोशों में से रेशम के टोप निकाले हैं। मैंने 'कहीं नहीं' को जन्म दिया है। मैंने आपको भविष्यवाणी करने वाली और जादुई घड़ियां लाकर दी हैं और स्फटिक के ग्लोब जुटाए हैं जिसमें आप आने वाले समय को देख सकते हैं। मैंने अफरे हुए पेट, टूटे हुए दिल और कानों में घण्टियों के लिए काढ़े और उबटनें तैयार की हैं। मैंने आपके लिए मोहरी, रात के साये, और बाज़ के आंसुओं से बने हुए खास घोल तैयार किए हैं जिनसे चुड़ैलों, पिशाचों और रात में टकराने वाली अन्य चीज़ों से बचा जा सकता है। मैंने आपको सात मील के जूते, सुनहरी छुअन और अदृश्यता का लबादा भी भेंट किया है।''

''न, यह लबादा तो किसी काम का नहीं था,'' राजा ने कहा।

''काम का तो था,'' जादूगर बोला।

''नहीं, बिल्कुल नहीं,'' राजा ने जवाब दिया, ''मैं बार-बार चीज़ों से टकराता था।''

''लबादे का काम था आपको अदृश्य बनाना, न कि आपको चीज़ों से टकराने से बचाना,'' जादूगर ने सफाई दी।

''मुझे तो बस इतना मालूम है कि मैं लगातार चीज़ों से टकराता जा रहा था,'' राजा ने कहा।

शाही जादूगर ने फिर लम्बे चर्मपत्र से पढ़ा, ''बौनादेश से सींग, रेतमानुष से रेत और इन्द्रधनुष से सोना तक मैं आपके लिए लाया हूं। अलावा इसके एक पत्ता सिलाई की सुइयां, मोम – ओहो, मुआफ कीजिए यह सूची मेरी पत्नी की है।''

''मैं जो अब चाहता हूं, वह है चंद्रमा। राजकुमारी लैनोर को चंद्रमा चाहिए नहीं तो वह ठीक नहीं हो पाएगी,'' राजा ने कहा।

''चंद्रमा तो कोई नहीं ला सकता। एक तो चांद 150, 000 मील दूर है, और हरे पनीर का बना हुआ है, और फिर वह इस महल से कम से कम दुगना बड़ा है,'' जादूगर बोला।

राजा ने फिर आग बबूला हो उठा और उसने शाही जादूगर को उसकी गुफा में वापिस भेज दिया। इसके बाद राजा ने शाही गणितज्ञ को बुला भेजा।

शाही गणितज्ञ गंजा था और उसकी नज़दीक की नज़र बहुत कमज़ोर थी। उसके सिर पर टोपी थी और दोनों कानों के पीछे एक-एक पेन्सिल लगी हुई थी। उसने काला सूट पहन रखा था जिस पर सफेद अंक लिखे हुए थे।

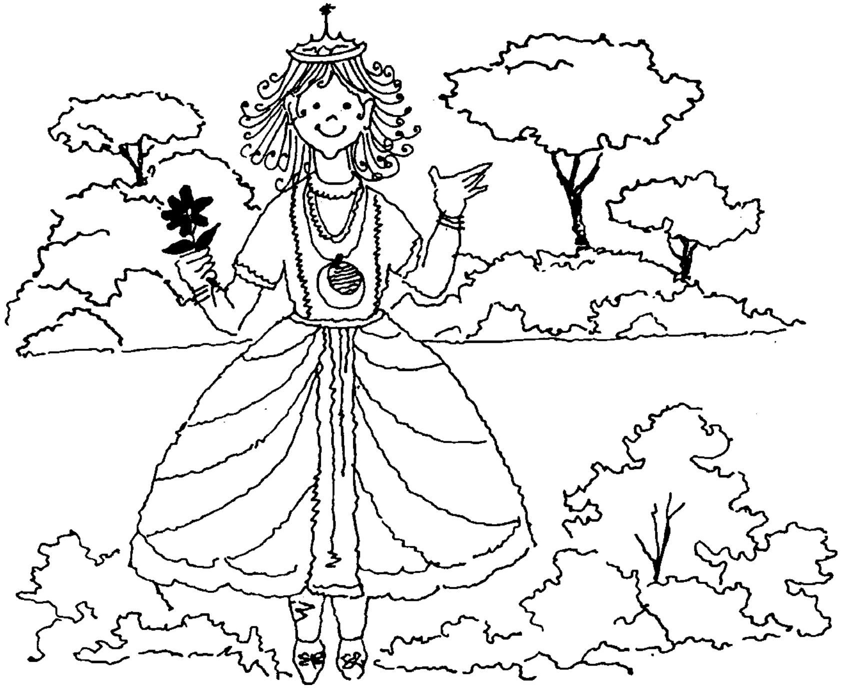

राजा ने छूटते ही गणितज्ञ से कहा, ''मुझे उन समस्याओं की सूची नहीं सुननी है जो 1907 से लेकर अब तक तुमने मेरे लिए हल की हैं। मुझे तो अपनी बेटी के लिए चंद्रमा चाहिए और तुम्हें इसका जुगाड़ करना है। राजकुमारी लैनोर को चांद मिलेगा, तभी वह ठीक हो पाएगी।''

''मुझे खुशी है आपने उन समस्याओं का ज़िक्र तो किया जो 1907 से लेकर अब तक मैने आपके लिए हल की हैं,'' शाही गणितज्ञ ने कहा। ''इत्तफाक से मेरे पास उन सबकी सूची है।''

उसने एक लिपटा हुआ लम्बा चर्मपत्र निकालकर उस पर नज़र दौड़ाई, ''देखें इसमें क्या-क्या है। मैंने असमंजस के दो सींगों के बीच, रात और दिन के बीच, क और ख के बीच के अंतर आपको बताए हैं। मैंने अनुमान लगाकर बताया है ऊंचाई कितनी ऊंची है और सुदूर पहुंचने के लिए क्या समय लगता है और 'चले गए' का अंजाम क्या होता है। मैंने समुद्री अज़गर की लंबाई नापी है, अमूल्य वस्तुओं का मूल्य आंका है, दरियाई घोड़े का वर्ग निकाला है। मैंने बताया है कि जब आप न तीन में होते हैं, न तेरह में तो उस समय दरअसल आप कहां होते हैं। आपके पास कितनी मात्रा में 'है' मौज़ूद है कि आप उसे ''हैं'' में बदला जा सके। समुद्री नमक से आप कितनी चिड़िया पकड़ सकते हैं- 18,77,96,132- अगर आपको जानने में रुचि हो।''

''इतनी चिड़ियां तो पृथ्वी पर हैं ही नहीं,'' राजा ने कहा।

''मैंने यह नहीं कहा कि हैं, मैंने यह बताया कि अगर होतीं तो।''

''मुझे अठ्ठारह करोड़ काल्पनिक चिड़ियों के बारे में तुमसे कुछ नहीं सुनना,'' राजा बोला, ''मुझे राजकुमारी के लिए चंद्रमा चाहिए।''

''चंद्रमा तो 300,000 मील दूर हैं,'' शाही गणितज्ञ ने कहा,'' वह सिक्के की तरह गोल और चपटा है, केवल वह ऐस्बेस्टस का बना हुआ है और इस राज्य से आधे आकार का है। अलावा इसके, वह आसमान में चिपका हुआ है। चंद्रमा को कोई नहीं ला सकता।''

राजा इस बार भी गुस्से में लाल-पीला हो गया। फिर उसने शाही विदूषक को बुलाने के लिए घंटी बजाई। विदूषक छलांगें मारता हुआ सिंहासन कक्ष में आया - अति रंगीन वस्त्रों, टोपी और घण्टियों के साथ और आकर सिंहासन के पास बैठ गया।

"कहिए, महाराज, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?" शाही विदूषक ने पूछा।

"मेरे लिए कोई कुछ नहीं कर सकता," राजा बड़े अफसोस से बोला। "राजकुमारी लैनोर को चंद्रमा चाहिए और वह तब तक ठीक नहीं होगी जब तक उसे चांद मिल नहीं जाता। तुम मेरे लिए वीणा पर कोई उदास धुन छेड़ो।"

"विद्वान लोगों के मुताबिक- चांद कितना बड़ा और कितनी दूर है?" विदूषक ने पूछा।

"मुख्य वज़ीर कहता है कि चंद्रमा 35,000 मील दूर है और राजकुमारी के कमरे से बड़ा है। शाही जादूगर का कहना है वह 150,000 मील दूर है और इस महल से दुगना बड़ा है। शाही गणितज्ञ सोचता है कि चंद्रमा 300,000 मील दूर है और इस राज्य से आधा है," राजा ने बताया।

शाही विदूषक ने कुछ देर वीणा को छेड़ा। "वे सभी बुद्धिमान लोग हैं," उसने कहा, "इसलिए वे ठीक ही कहते होंगे। अगर वे सभी सही हैं तो चंद्रमा सचमुच उतना ही बड़ा और उतनी ही दूर होगा जितना कि वे सब कहते हैं। अब करना यह चाहिए कि राजकुमारी लैनोर से पूछें कि चांद कितना बड़ा है और कितनी दूर है।"

"अरे, यह ख्याल तो मुझे आया ही नहीं," राजा ने कहा।

"मैं उससे जाकर पूछता हूं, महाराज," विदूषक ने कहा। और वह चुपके से राजकुमारी के कमरे में पहुंचा।

राजकुमारी जाग रही थी और वह विदूषक को देखकर बहुत प्रसन्न हुई। लेकिन उसका चेहरा पीला था और आवाज़ बहुत कमज़ोर थी।

"क्या तुम मेरे लिए चंद्रमा लाए हो?" उसने पूछा।

"अभी नहीं," विदूषक ने उत्तर दिया, "पर मैं तुरंत लाऊंगा। तुम बताओ कि चांद कितना बड़ा है?"

"मेरे अंगूठे के नाखून से ज़रा छोटा है," राजकुमारी ने कहा, "क्योंकि जब मैं अंगूठा उठा कर चांद के सामने करती हूं तो चांद छिप जाता है।"

"और चांद कितनी दूर है," विदूषक ने फिर पूछा।

"मेरी खिड़की के बाहर जो पेड़ है, उससे ऊंचा तो वह नहीं है," राजकुमारी ने बताया, "क्योंकि कभी कभी वह पेड़ की टहनियों में उलझ जाता है।"

"तुम्हारे लिए चांद लाना बहुत आसान काम है," विदूषक बोला। "आज रात जब चांद ऊपर की टहनियों में उलझेगा तो मैं पेड़ पर चढ़कर उसे उतार लूंगा," विदूषक ने कहा।

फिर उसने कुछ और सोचा, ''अच्छा यह बताओ कि चंद्रमा किस चीज़ का बना हुआ है?''

''ओह,'' राजकुमारी बोली, ''वह तो सोने का बना है – तुम इतना भी नहीं जानते।''

शाही विदूषक राजकुमारी के कमरे से निकलकर सीधे शाही सुनार के पास गया। उसने सुनार से छोटा-सा सोने का चांद बनवा लिया जो राजकुमारी के अंगूठे के नाखून से ज़रा-सा छोटा था। फिर उसे एक सोने की डोरी में पिरोकर, राजकुमारी के लिए रख लिया।

''मैंने यह क्या बनाया है?'' शाही सुनार ने पूछा।

''तुमने चंद्रमा बनाया है,'' विदूषक ने उसे बताया।

''लेकिन चांद तो 500,000 मील दूर है और कांसे का बना हुआ है और कंचे की तरह गोल है,'' शाही सुनार बोला।

''ऐसा तुम सोचते हो,'' शाही विदूषक ने चलते-चलते कहा।

चंद्रमा लेकर शाही विदूषक राजकुमारी लैनोर के पास पहुंचा। वह एकदम प्रसन्न हो गई। अगली सुबह वह उठकर बाग में खेलने लगी। लेकिन राजा की चिन्ताएं अभी दूर नहीं हुई थीं, उसे मालूम था कि रात को चांद आसमान में निकलेगा और वह नहीं चाहता था कि राजकुमारी उसे देखे। अगर राजकुमारी चंद्रमा को देख लेगी तो उसे पता चल जाएगा कि चांद उसने गले में पहना है वह नकली है।

इसलिए राजा ने मुख्य वज़ीर को बुला भेजा और उससे कहा, ''हमें किसी भी कीमत पर राजकुमारी लैनोर को आज की रात आसमान में चंद्रमा देखने से रोकना होगा।''

मुख्य वज़ीर ने अपने माथे पर दस्तक देते हुए बहुत सोचकर कहा, ''मुझे तो केवल एक उपाय सूझता है। हमें राजकुमारी को गहरा काला चश्मा पहना देना चाहिए ताकि उसे कुछ भी दिखाई न दे। तब वह

आसमान में चमकते हुए चंद्रमा को नहीं देख पाएगी।''

इस बात पर राजा को बहुत गुस्सा आया और उसने अपने सिर को बाएं से दाएं हिलाया। ''अगर वह काला चश्मा पहनेगी तो चीज़ों से टकराएगी,'' राजा बोला, ''ऐसे तो वह फिर बीमार पड़ जाएगी।''

राजा ने वज़ीर को भेज दिया और शाही जादूगर को बुलाया।

''हमें चंद्रमा को छिपाना होगा,'' राजा ने जादूगर से कहा, ''ताकि राजकुमारी लैनोर उसे आज रात आसमान में न देख पाए। बोलो हम चंद्रमा को कैसे छिपा सकते हैं?''

शाही जादूगर पहले तो अपने हाथों के बल फिर सिर के बल और फिर पैरों पर वापिस खड़ा हुआ। ''मुझे मालूम है हम क्या कर सकते हैं,'' उसने कहा। ''हम खम्भों के सहारे महल के बगीचों के चारों ओर काले मखमल के ऊंचे पर्दे तान देंगे। राजकुमारी लैनोर उन परदों के पार देख नहीं पाएगी और इस तरह चंद्रमा भी छिप जाएगा।''

राजा इस बात पर और भी क्रुद्ध हुआ और अपनी बाहें ज़ोर-ज़ोर से हिलाने लगा। ''मखमल के काले पर्दे तो हवा तक को रोक लेंगे। राजकुमारी लैनोर का दम घुटेगा और वह फिर से बीमार पड़ जाएगी।'' राजा ने शाही जादूगर को भेज कर शाही गणितज्ञ को बुला भेजा।

''हमें कुछ करना होगा,'' राजा ने कहा, ''ताकि आज की रात जब आसमान में चांद निकले तो राजकुमारी लैनोर उसे देख न पाए। तुम तो इतना कुछ जानते हो, इस समस्या का भी हल निकालो।''

शाही गणितज्ञ पहले गोल-गोल और उसके बाद चौकोर घूमकर स्थिर हो गया। ''हो गया! हो गया!'' वह बोला। ''हम हर रात बगीचों में आतिशबाज़ी चला सकते हैं। हम चांदी के फव्वारे और सोने के झरने जैसी आतिशबाज़ी चलाएंगे जिनके चलने से आसमान चिंगारियों से इतना भर जाएगा कि दिन के उजाले जैसा दिखाई देगा। इस तरह राजकुमारी लैनोर चंद्रमा नहीं देख पाएगी।''

इस बात पर राजा को इतने ज़ोरों का गुस्सा आया कि वह ऊपर-नीचे कूदने लगा। ''आतिशबाज़ी से राजकुमारी लैनोर सो नहीं पाएगी। अगर उसकी नींद पूरी नहीं हुई, तो वह फिर से बीमार पड़ जाएगी।'' राजा ने शाही गणितज्ञ को भी भेज दिया।

जब राजा ने आसमान में देखा तो अंधेरा हो चुका था। चांद की एक कतरन ने झांकना शुरु कर दिया था। राजा डर के मारे उछल पड़ा और उसने विदूषक के लिए घण्टी बजाई। विदूषक छलांग लगाता हुआ सिंहासन कक्ष में आया और सिंहासन के पास बैठ गया।

''मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं, महाराज?'' उसने पूछा।

''मेरे लिए कोई कुछ नहीं कर सकता,'' राजा बहुत दुखी होकर बोला, ''चंद्रमा फिर से निकल रहा है। वह राजकुमारी लैनोर के कमरे में भी झांकेगा। और उसे पता चल जाएगा कि चांद आसमान में है न कि उसके गले में। बस तुम मेरे लिए वीणा पर कोई उदास धुन छेड़ो, बहुत बहुत उदास, क्योंकि जैसे ही राजकुमारी चांद को देखेगी, वह बीमार हो जाएगी।''

विदूषक ने धीरे-धीरे तारों को छेड़ना शुरु किया। ''आपके विद्वान क्या कहते हैं?'' उसने पूछा।

''उन्हें कोई ऐसा उपाय नहीं सूझ रहा जिससे राजकुमारी लैनोर दोबारा बीमार नहीं पड़ेगी।'' राजा ने कहा।

विदूषक ने एक और गीत बजाया, बहुत धीमे सुरों में। ''आपके विद्वान तो सब कुछ जानते हैं,'' उसने कहा, ''और अगर वे चांद को नहीं छिपा सकते तो इसका मतलब है कि वह छिप ही नहीं सकता।''

राजा ने अपना चेहरा हाथों से ढांप लिया और एक ठंडी सांस भरी। अचानक उसने सिंहासन से उछलकर खिड़की की ओर इशारा किया, ''देखो,'' वह चिल्लाया। ''चंद्रमा इस समय राजकुमारी लैनोर की खिड़की में चमक रहा है। कौन समझाए कि यह कैसे हो सकता है कि चंद्रमा आसमान में भी चमक रहा है और उसके गले में भी सोने की ज़ंजीर के सहारे लटक रहा है?''

विदूषक ने वीणा से हाथ उठा लिए। ''यह किसने समझाया कि चांद कैसे लाया जाए जबकि आपके विद्वानों को मानना था कि वह बहुत बड़ा है और बहुत दूर है? राजकुमारी लैनोर ने। इसलिए राजकुमारी लैनोर आपके विद्वानों से ज़्यादा बुद्धिमान है और चंद्रमा के बारे उनसे बेहतर जानती है। इसलिए मैं उसी से पूछूंगा।'' और इससे पहले कि राजा उसे रोक पाता, विदूषक चुपके से सिंहासन कक्ष में से निकलकर संगमरमर की सीढ़ियां चढ़ता हुआ राजकुमारी लैनोर के कमरे में जा पहुंचा।

राजकुमारी बिस्तर पर लेटी हुई थी। लेकिन पूरी तरह जागी हुई थी। वह खिड़की में चमकते चंद्रमा को देख रही थी। उसके हाथ में उसका चांद था जो विदूषक बनवाकर लाया था। विदूषक बहुत उदास था और उसकी आंखें भींग रही थीं।

''बोलो, राजकुमारी लैनोर,'' वह उदासी से बोला, ''भला यह कैसे हो सकता है कि चंद्रमा आसमान में भी चमक रहा है जबकि वह सोने की ज़ंजीर के सहारे तुम्हारे गले में लटक रहा है?''

राजकुमारी ने उसे देखा और खिलखिलाकर हंस पड़ी। ''धत यह तो बहुत आसान है,'' उसने कहा। जब मेरा कोई दांत टूट जाता है तो उसकी जगह दूसरा निकल आता है कि नहीं?''

''अरे हां।'' विदूषक बोला। ''और जब यूनिकार्न नाम के जानवर का सींग झड़ जाता है तो उसकी जगह उसके माथे के बीचों-बीच दूसरा सींग उग आता है।''

''यह मुझे सूझना चाहिए था'', विदूषक ने कहा, ''क्योंकि दिन की रोशनी के साथ भी ठीक ऐसा ही होता है।''

''और चंद्रमा के साथ भी ठीक ऐसा ही होता है,'' राजकुमारी लैनोर ने कहा, ''मुझे लगता है कि सभी चीज़ों के साथ ठीक ऐसा ही होता है।''

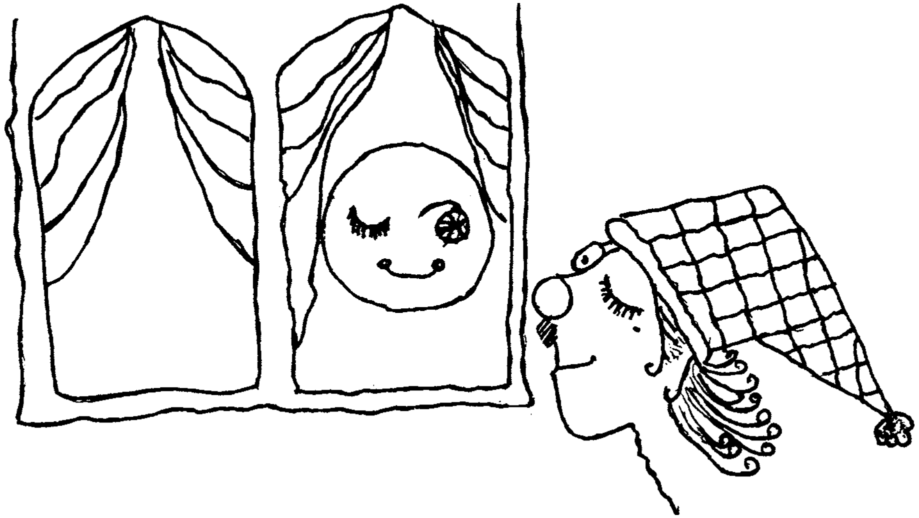

उसकी आवाज़ मद्धिम हो गई और कुछ देर में बंद हो गई। विदूषक ने देखा कि राजकुमारी सो गई है। उसने बड़े आराम से उसके ऊपर रज़ाई डाल दी।

लेकिन कमरा छोड़ने से पहले वह खिड़की तक गया और चंद्रमा को आंख मार दी, क्योंकि विदूषक को ऐसा लग रहा था कि जैसे चंद्रमा ने भी उसे आंख मारी है।

❑❑❑❑